Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

2. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No. ____________________

(In words)

Test Booklet No.

D – 0305

PAPER – III

PHILOSOPHY

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्न-पत्र – III

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

SECTION - I

खण्ड – I

Note : This section contains five (5) questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

(5x5=25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x5=25 अंक)

"My uniform experience has convinced me that there is no other God than Truth. The little fleeting glimpses, therefore, that I have been able to have of Truth can hardly convey an idea of indescribable lustre of truth, a million times more intense than that of the sun the daily see with our eyes. In fact, what I have caught is only the faintest glimmer of that mighty effulgence".

"If it is all possible for the human tongue to give the fullest description of God.... Then we must say that God is truth... But I went a step further and said Truth is God. I never found a double meaning in connection with Truth. Hence the definition 'Truth is God' gives me the greatest satisfaction.

- M.K.Gandhi

My Experiments with Truth

Young India.

''मेरे अनुभव की एकरूपता ने मुझे इस विषय में आश्वस्त कर दिया है कि सत्य के अतिरिक्त कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। इसलिए जो सत्य के विषय में थोड़ी सी भागती हुई झलकियाँ पाने में मैं समर्थ हुआ हूँ, उनसे अवर्णनीय सत्य की चमक के प्रत्यय का कठिनाई से बोध होता है, सत्य की यह चमक जिस सूर्य को हम अपनी आखों से प्रतिदिन देखते हैं उससे लाखों गुना अधिक तीव्र है। वास्तव में मैंने जो झलकी प्राप्त की है वह उस महान दीप्ति की एक धुंधली चमक मात्र है।''

''यदि मानव जिह्वा के लिए यह तनिक भी संभव होता कि वह ईश्वर का पूर्ण वर्णन करने में सक्षम होती तो हम निश्चित रूप से यह कहते कि ईश्वर सत्य है। किंतु मैं एक पग आगे गया और मैने कहा कि सत्य ईश्वर है। मुझे सत्य के विषय में कभी भी दो अर्थ नहीं मिला। इसलिए यह परिभाषा कि सत्य ही ईश्वर है मुझे अधिकतम सन्तोष प्रदान करती है।''

एम.के.गांधी

सत्य के साथ मेरे प्रयोग

यंग इण्डिया

1. State Gandhis conception of God.

गांधी के ईश्वर की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

2. State Gandhis conception of Truth.
गांधी के सत्य की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

3. Did Gandhi equate God with Truth ? Why ?
क्या गांधी ने ईश्वर को सत्य से जोड़ा है? क्यों?

4. Did Gandhi move further and came to the conclusion that "Truth is God". If so, why ?
क्या गांधी आगे चलकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सत्य ईश्वर है। यदि ऐसा है तो क्यों?

5. Is his definition of God, an answer to the atheists and agnostics ? If so, why ?
क्या उनकी ईश्वर की परिभाषा अनीश्वरवादियों और अज्ञेयवादियों को प्रत्युत्तर है? क्यों?

SECTION - II

खण्ड – II

Note : This section contains fifteen (15) questions each to be answered in about thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.

(5x15=75 marks)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच (5-5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x15=75 अंक)

6. Explain the terms 'Ākasa', Dik and Kāla.

आकाश, दिक और काल शब्दों की व्याख्या कीजिए।

7. Define the terms 'Appearance' and 'Reality'.
आभास और यथार्थ्य को पारिभाषित कीजिए।

8. Define Khyativāda. Explain.
ख्यातिवाद को पारिभाषित कीजिए।

9. State briefly the Correspondence theory of Truth.
सत्य के संवाद सिद्धान्त का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

10. Explain the concept of Pratyakṣa in Samkara Vedanta.
शांकर वेदान्त में प्रत्यक्ष की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

11. State the four Purusārthas and explain briefly their significance.
चार पुरुषार्थ कौन-कौन से हैं और उनके महत्व की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

12. What is meant by lokasangraha ? Explain.
लोक-संग्रह से क्या अभिप्राय है? व्याख्या कीजिए।

13. What is meant by Eudaemonism ? Explain.

आनन्दवाद (यूडानिज्म) से क्या अभिप्राय है? व्याख्या कीजिए।

14. Are rights and duties corelated ? Explain.

क्या अधिकार और कर्त्तव्य परस्पर सम्बन्धित हैं? व्याख्या कीजिए।

15. State Kant's views on morality.

कांट के नैतिकता सम्बन्धी विचारों का वर्णन कीजिए।

16. State the Triratnas and bring out their significance.

त्रिरत्नों का वर्णन कीजिए और उनके महत्व को उजागर कीजिए।

17. State the rules of quantification.
परिमाणन के नियमों का उल्लेख कीजिए।

18. Distinguish between argument and argument form.
युक्तिवाद और 'युक्तिवाद के आकार' में भेद कीजिए।

19. Explain the square of Opposition.

प्रतिमुखता के चकोर (स्क्वयर आफ ऑपोजीशन) की व्याख्या कीजिए।

20. Define Rta and explain its significance.

ऋत् को पारिभाषित कीजिए और इसके महत्व की व्याख्या कीजिए।

SECTION - III

खण्ड – III

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचो प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Elective - I

विकल्प – I

21. Write a brief note on religious hermeneutics.

धार्मिक शास्त्रार्थमीमांसा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

22. Examine the Buddhist concepts of metta (compassion) and Khanti (tolerance) and bring out their relevance to promote religious harmony.

मेटा (करुणा) और खान्ति (सहिष्णुता) की बौद्ध अवधारणाओं की परीक्षा कीजिए और धार्मिक सामञ्जस्य बटाने में उनकी प्रासंगिकता बताइए।

23. State the main arguments given in support of the doctrine of re-incarnation.

पुनर्जन्म के सिद्धान्त के समर्थन में दी गयी प्रमुख युक्तियों का विवेचन कीजिए।

24. Analyse the ethical significance of the doctrine of ahiṁsa in Jainism.

जैन धर्म में अहिंसा के सिद्धान्त के नैतिक महत्त्व का विश्लेषण कीजिए।

25. What is the place of grace in christianity ? Explain.

ईसाई धर्म में कृपा का क्या स्थान है? व्याख्या कीजिए।

OR / अथवा

Elective - II

विकल्प – II

21. Analyse Frege's distinction between concepts and objects.

फ्रेगेकृत अवधारणाएँ तथा वस्तुएँ के भेद का विश्लेषण कीजिए।

22. Elucidate Quine's attack on the analytic - synthetic distinctions

क्वाइन द्वारा विश्लेषणात्मक संश्लेषणात्मक भेद पर किये गये आक्षेप का मूल्यांकन कीजिए।

23. What is the theory of meaning ? Bring out the distinction between holistic and atomistic approach to meaning.

अर्थ का सिद्धान्त क्या है? अर्थविषयक समग्रता परक तथा आणविक दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए

24. Examine Strawson's criticism of Russells theory of description.

स्ट्रॉसन द्वारा रसल के वर्णन सिद्धान्त का परीक्षण कीजिए।

25. Discuss wittgenstein's conception of philosophy.

विटगेंस्टाइन के अवधारणात्मक दर्शन की व्याख्या कीजिए।

OR / अथवा

Elective - III

विकल्प – III

21. Examine how phenomenologists approach to the understanding of human condition.

संवृत्तिशास्त्रियों द्वारा मानवीय दशा के बोध के प्रयास का परीक्षण कीजिए।

22. Discuss briefly the central issues of phenomenology with special reference to the idea of the text ; the conflict of interpretation of the text and the possibilities of agreement.

संवृत्तिशास्त्र के केन्द्रीय पक्ष मूलग्रन्थ की अवधारणा पर मतभेद तथा सहमति की सम्भावना का विशेष संदर्भ देते हुए संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

23. Elucidate the term 'Lebensweit'

जीवनविश्व (लेबन्सस्वीट) पद को समझाइए।

24. State the method of phenomenological reduction.

संवृत्तिशास्त्रीय संक्षेपीकरण (रिडक्शन मेथड) पध्दति का विवेचन कीजिए।

25. Analyse the concepts 'Consciousness' and 'Intentionality' from the viewpoints of hermeneutics and phenomenology.

संवृत्तिशास्त्रियों तथा शास्त्रार्थ शास्त्रियों (हारमेनुटिक्स) के दृष्टिकोणों के अनुसार चेतना तथा अभिप्राय का विश्लेषण कीजिए।

OR / अथवा

Elective - IV

विकल्प – IV

21. What is Khyati ? State clearly with illustrations distinguishing between

(a) asatkhyati (b) anyathakhyati .

ख्याति क्या है? स्पष्ट रूप से भेद को सोदाहरण समझाइए।

(अ) असत्ख्याति (ब) अन्यथाख्याति

22. State briefly Sankara's interpretation of mahāvakyas.

शंकर द्वारा महावाक्य व्याख्या का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

23. Outline the salient aspects of Nimbarka's Vedantic philosophy.

निम्बार्क के वेदान्तीय दर्शन के प्रमुख पक्षों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

24. Examine critically the objections raised by Ramanuja against Sankara's conception of māyā.

रामानुज द्वारा शंकर के माया सिध्दान्त के विरोध में उठायी गई आपत्तियों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

25. Analyse any one of the theories of causation.

कारणतावाद संबंधी किसी एक सिध्दान्त का विश्लेषण कीजिए।

OR / अथवा

Elective - V

विकल्प – V

21. Evaluate the Gandhian doctrine of Trusteeship.

गांधी के न्यासिता (ट्रस्टीशिप) सिध्दान्त का मूल्यांकन कीजिए।

22. Discuss Gandhi's conception of 'Truth is God'.

गांधी की अवधारणा ''सत्य ईश्वर है'' की व्याख्या कीजिए।

23. State Gandhi's conception of peace.

गांधी की शांति की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

24. Examine what aspects outlined by Gandhi in his book 'Hind Swaraj', have relevance to the present day society.

गांधी ने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में किन पक्षों को रेखांकित किया है, जो समाज के लिए वर्तमान में प्रासङ्गिक हैं? विश्लेषण कीजिए।

25. Is the Gandhian ideal of a Sarvodaya Society realisable today. Give your reasons.

क्या गांधी के सर्वोदय समाज के आदर्श को वर्तमान में वास्तविक माना जा सकता है? अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।

SECTION - IV

खण्ड – IV

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics. This question carries 40 marks.

(40x1=40 marks)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंको का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

26. Examine the concept of Secularism. Consider to what extent it is possible to promote secular values in a plural society in India, in the perspective of Gandhian philosophy.

धर्मनिरपेक्षतावाद की अवधारणा का परीक्षण कीजिए। गाँधी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में यह विचार कीजिए कि कहाँ तक भारत जैसे बहु संख्यक समाज में धर्म निरपेक्षतावादी मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना संभव है।

OR / अथवा

Give a clear exposition of the ethics of punishment. Which theory of punishment is, according to you, ethically satisfactory.

दण्ड के नीतिशास्त्र का स्पष्ट विवेचन कीजिए। आपके अनुसार दण्ड का कौन सा सिद्धान्त नैतिक रूप से सन्तोषप्रद है।

OR / अथवा

Explain the theory of Quantification as an attempt of exploring the logic of arguments containing general propositions.

सामान्य तर्क-वाक्यों से युक्त प्रमाणों के तर्कशास्त्र को जानने के प्रयास के रूप में परिमाणन सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

OR / अथवा

Analyse the roles of Puruṣa and Prakṛti play in the Samkhya theory of cosmic evolution.

सांख्य के सृष्टि-विकास के सिद्धान्त में पुरुष और प्रकृति की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

OR / अथवा

Analyse the doctrines of Pancaśíla and Triratnas and their application for the moral development of the individual.

मनुष्य के नैतिक विकास में पंचशील और त्रिरत्न के सिद्धान्तों का और उनके उपयोग का विश्लेषण कीजिए।

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....